जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

स्वतंत्रता ज्ञान से नहीं; अपने अज्ञान से खण्डित होती है।
ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-25

वर्ष : 27, अंक : 3 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

राजस्थान में जैनसमाज का अल्पसंख्यक दर्जा कायम

जयपुर (राज.) : विगत अनेक सप्ताहों से राजस्थान में जैनसमाज को अल्पसंख्यक दर्जा दिये जाने के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियाँ पनप रहीं थी, जिन समस्त भ्रांतियों का निराकरण करते हुये मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराराजे सिंधिया ने स्पष्ट किया कि राज्य में जैनसमुदाय को दिया गया अल्पसंख्यक का दर्जा कायम रहेगा, उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक कानून में संशोधन के अध्यादेश के निष्प्रभावी हो जाने से इस दर्जे पर कोई असर नहीं पड़ा है। अल्पसंख्यक का अध्यादेश पारित नहीं कराने के बावजूद जैनसमाज को धार्मिक अल्पसंख्यक घोषित करनेवाली अधिसूचना आज भी पूर्ववत् लागू है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 213 (2) (ए) के अन्तर्गत जैनसमाज को दिया गया यह अधिकार अध्यादेश के स्थायी कानून न बनने के बावजूद भी पूर्ववत् ही रहेगा।

उन्होंने यह भी कहा कि जैनसमाज की आशंकायें निर्मूल है, यह समस्या है ही नहीं, अनावश्यकरूप से जैनसमाज में यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि अध्यादेश को विधेयक के रूप में विधानसभा में पारित नहीं करवाने से जैनियों का धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जा समाप्त हो गया है; किन्तु यह सत्यता नहीं है। इस सम्बन्ध में अतिरिक्त महाधिवक्ता अरुणेश्वर गुप्ता की भी राय प्राप्त कर ली है।

जैनसंस्कृति रक्षामंच के परामर्शदाता राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री पानाचन्दजी जैन ने उक्त बात की पुष्टी करते हुये कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण पूर्णत: विधिसम्मत है।

सुप्रिम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश श्री नरेन्द्रमोहन कासलीवाल ने भी इसी आशय का मत व्यक्त किया।

जैनसंस्कृति रक्षामंच के अध्यक्ष श्री मिलापचन्दजी डंडिया ने उक्त समस्या का सम्मानजनक ढंग से निवारण कर देने के लिये मुख्यमंत्री का जैनसमाज की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया।

दिनांक 18 अप्रैल को जैनसंस्कृति रक्षा मंच तथा श्वेताम्बर महासभा द्वारा संयुक्तरूप से भट्टारकजी की नसियां, जयपुर में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

समारोह में पूर्व न्यायाधीश श्री पानाचन्दजी जैन, लोकायुक्त मिलापचन्द जैन, न्यायमूर्ति श्रीमाल, पूर्व अतिरिक्त मुख्यसचिव पी.एन. भण्डारी, दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष महेन्द्रकुमार पाटनी, तीर्थसंरक्षिणी महासभा के श्री पूनमचन्दजी गंगवाल व धर्मचन्द पहाड़िया, श्री महावीरजी के कार्याध्यक्ष श्री सोहनलालजी सेठी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, दिग. जैन विद्वत्परिषद से श्री अखिलजी बंसल, दिग. जैन महासभा, राजस्थान जैनसभा, दिग. जैन सोशल ग्रुप्स, दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, जैन युवा फैडरेशन आदि शताधिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा मुख्यमंत्री का सम्मान किया गया।

जैन अल्पसंख्यक दर्जा के सम्बन्ध में विशेष भूमिका निभानेवाले राजस्थान के भाजपा उपाध्यक्ष श्री चन्द्रराज सिंघवी का भी जैनसमाज ने विशेष आभार व्यक्त किया। **- णमोकार जैन**

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

1. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर चौक में समाज के विशेष आमन्त्रण से पधारे ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के 4 से 14 अप्रैल, 04 तक प्रात: एवं रात्रि में प्रवचनसार की चरणानुयोग चूलिका पर मार्मिक प्रवचन हुए।

दोपहर में श्री ब्रह्मचर्याश्रम में पण्डित राजमलजी जैन के सान्निध्य में करणानुयोग से संबंधित विषय पर तत्त्वचर्चा हुई।

2. बीना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 15 से 25 अप्रैल, 04 तक ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा प्रात: एवं रात्रि में प्रवचनसार ग्रन्थ की चरणानुयोग चूलिका पर विशेष प्रवचन हुए।

इस अवसर पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण के लिये एवं नियमित पाठशाला हेतु भी समाज को प्रेरणा दी गई।

अहिंसा चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7 बजे से अवश्य सुनें।
अहिंसा चैनल आपके यहाँ न आता हो तो (011) 51598351, 51598353, 9810371078 नं. पर संपर्क करें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

8 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा ६

ते चेव अत्थिकाया तेक्कालियभावपरिणदा णिच्चा।
गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता ।।6।।
त्रिकालभावी परिणमित होते हुए भी नित्य जो।
वे पंच अस्तिकाय वर्तनलिंग सह षट् द्रव्य हैं ।।6।।

जो तीन काल के भावों रूप परिणमित होते हैं तथा नित्य हैं, वे पंच अस्तिकाय कालद्रव्य सहित छहों द्रव्य हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में गाथा के भाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न 'यहाँ पाँच अस्तिकायों को और काल को द्रव्यपना कहा है।

द्रव्य वास्तव में सहभावी गुणों तथा क्रमभावी पर्यायों को अनन्यरूप से आधारभूत हैं। इसलिए जो वर्त चुके हैं, वर्त रहे हैं और भविष्य में वर्तेंगे उन भावों या पर्यायोंरूप परिणमित होने के कारण पाँच अस्तिकाय और काल ह्न ये छहों द्रव्य हैं।

भूत-वर्तमान और भावी भावों स्वरूप परिणमित होने से उन्हें अनित्य नहीं कह सकते; क्योंकि भूत, वर्तमान और भावी भावरूप अवस्थाओं में भी प्रतिनियत अर्थात् अपने-अपने निश्चितस्वरूप को नहीं छोड़ते, इसलिए वे नित्य ही हैं।

कालद्रव्य पुद्गलादि के परिवर्तन का हेतु होने से तथा पुद्गलादि के परिवर्तन द्वारा उसकी पर्यायें ज्ञात होती हैं, इसलिए कालद्रव्य को अस्तिकायों में अर्न्तभाव करने के लिए उसे परिवर्तन लिंग विशेषण नाम दिया है।'

यहाँ कालद्रव्य को 'परिवर्तन लिंग' जो नाम दिया है, इसके दो कारण हैं ह्न एक तो यह कि छहों द्रव्यों में परिवर्तन या परिणमन होता है, उसमें कालद्रव्य की निमित्तता है। जब भी किसी भी द्रव्य में जो भी परिणमन या परिवर्तन होगा उसके अपने पाँच समवायों में निमित्त समवाय के रूप में कालद्रव्य ही होगा।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि प्रत्येक पर्याय के परिणमन में या प्रत्येक कार्य के होने में पाँच समवाय अर्थात् पाँच कारण होते हैं ह्न स्वभाव, पुरुषार्थ, होनहार, काल और निमित्त। इनमें प्रारंभ के चार कारण तो स्वद्रव्यरूप उपादान में ही होते हैं और पाँचवाँ कारण निमित्तरूप परद्रव्य होता है। इसप्रकार कालद्रव्य छहों द्रव्यों के परिवर्तन में कारण हैं, अत: इसे परिवर्तन लिंग कहा है।

दूसरा कारण यह है कि द्रव्यों के पर्यायरूप परिणमन से ही कालद्रव्य की पहचान होती है। पुद्गलादि का परिवर्तन ही जिसका लिंग है अर्थात् जिसकी पहचान है, वह परिवर्तन लिंग है।

देखो, कालद्रव्य आँखों से दिखाई तो देता नहीं है, पुद्गलादि में जो परिवर्तन होता है, वह कार्य होता है, तो उसका कोई निमित्त कारण भी होना चाहिए ह्न इसप्रकार परिवर्तनरूप चिह्न द्वारा काल का अनुमान होता है। इसलिए काल परिवर्तन लिंग है तथा पुद्गलादि के परिवर्तन द्वारा कालद्रव्य की पर्यायें समय आदि ज्ञात होते हैं, इसलिए भी काल परिवर्तन लिंग है।

गुरुदेव श्री कानजी स्वामी ने भी परिवर्तन लिंगरूप कालद्रव्य के स्पष्टीकरण में कहा है कि ह्न ''यहाँ अस्तिकाय द्रव्यों का वर्णन मुख्य है और कालद्रव्य का वर्णन गौण है। 'काल' अस्तिकाय नहीं, किन्तु द्रव्यरूप से काल का अस्तित्व है। पुद्गलादि के परिणमन से कालद्रव्य का अनुमान होता है। जितने समय में एक पुद्गल परमाणु एक प्रदेश से निकटवर्ती दूसरे प्रदेश में मन्दगति से जाता है उतनी समय सीमा को एकसमय कहते हैं। वह 'समय' कालद्रव्य की पर्याय है। छोटे से छोटे काल का माप एक समय है। काल की पर्याय का माप एक प्रदेश में आ जाता है, तो उस पर्याय का धारक द्रव्य भी एक प्रदेश में पूरा हो जाता है। पर्याय से पर्यायवान द्रव्य सिद्ध होता है।''

गुरुदेवश्री ने इस प्रसंग पर एक मार्मिक बात यह कही है कि ह्न ''यद्यपि किसी भी द्रव्य पर्याय पर के कारण न हुई है, न हो रही है और न होगी। आत्मा जो विकाररूप परिणमा है, वह भी अपना गुण-पर्यायों से ही परिणमा है, पर के कारण नहीं। अर्थ समय का ऐसा ही स्वभाव है। जैसा अर्थ समय का स्वभाव है, वैसा ही ज्ञानसमय उसे जानता है और वैसा ही वाणी में आता है।.....

यदि कोई द्रव्य काल के कारण परिणमें तो उस द्रव्य का द्रव्यपना ही कहाँ रहा ? कर्म के कारण विकार नहीं होता और कालद्रव्य के कारण सिद्ध भगवान को नहीं परिणमना पड़ता, द्रव्य स्वयं ही तीनों काल अपनी अवस्थारूप से परिणमता है.....।''

यहाँ इस गाथा और गुरुदेव का अभिप्राय यह है कि सभी द्रव्य पूर्ण स्वतंत्र और स्वावलंबी हैं। परद्रव्य के कारण परिणमन नहीं होता। हाँ, जो भी किसी भी द्रव्य में स्वभावत: अपने स्वचतुष्टय परिणमन होता है, उसमें पाँचों समवाय सहज स्वत: होते ही हैं; निमित्त समवाय के रूप में कालद्रव्य का अस्तित्व भी वहाँ होता ही है। अन्त में गुरुदेव कहते हैं कि ह्न

''ज्ञानी उस समय विचारता है कि ह्न मैं अपने चैतन्य स्वभाव से नित्य टिककर पलटनेवाला हूँ ह्न ऐसी श्रद्धा होने पर सहज ही कषायें कृश होने लगती हैं। अत: सर्वप्रथम वस्तुस्वरूप समझने का प्रयत्न करना चाहिए तभी धर्म का प्रारंभ होता है। ●

गाथा ७

अण्णोण्णं पविसंता देंता ओगासमण्णमण्णस्स।
मेलंता वि य णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति ।।7।।
परस्पर मिलते रहें अरु, परस्पर अवकाश दें।
जल-दूध वत् मिलते हुए, छोड़ें न स्व-स्वभाव को ।।7।।

यहाँ आचार्य देव कहते हैं कि ह्न वे द्रव्य 'अन्योन्यं प्रवशन्ति' अर्थात् एक-दूसरे में प्रवेश करते हैं, 'अन्योन्यस्य अवकाशं ददन्ति' अर्थात् परस्पर एक-दूसरे को अवकाश देते हैं, 'मिलन्ति', क्षीर-नीर के समान परस्पर मिलते हैं; तथापि सदा अपने-अपने स्वभाव को 'न विजहन्ति' नहीं छोड़ते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं ह्न यहाँ छह द्रव्यों का परस्पर अत्यन्त संकर अर्थात् मिलाप, मिश्रपना होने पर भी वे प्रतिनियत अर्थात् अपने-अपने निश्चितस्वरूप से च्युत नहीं होते। इसलिए परिणामवाले होने पर भी वे नित्य हैं।

यद्यपि जीव तथा कर्म को व्यवहारनय के कथन से एकत्व है, तथापि वे जीव तथा कर्म एक-दूसरे के स्वरूप को ग्रहण नहीं करते।

स्व. पं. हीराचन्दजी इस गाथा का भाव स्पष्ट करते हुए कहते हैं ह्न

जीव दरब चिद्रूप जदपि करम सौं मिलि रहै।
तदपि न तजै स्वरूप, निहचै नय अवलोकतें।।

यद्यपि चैतन्यस्वरूपी जीवद्रव्य संसार अवस्था में कर्मों से मिल रहे हैं, तथापि निश्चयनय से वे अपना-अपना स्वरूप नहीं छोड़ते।

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी अपने प्रवचन में द्रव्यों की स्वतंत्र सत्ता की महिमा बताते हुए गद्गद् होकर कहते हैं ह्न ''देखो तो सही द्रव्यों की स्वतंत्रता ! बिच्छू के काटने से आत्मद्रव्य को बाधा नहीं पहुँची। आत्मद्रव्य के परिणाम आत्मा में, शरीर के शरीर में और बिच्छू के बिच्छू में हैं; एक क्षेत्र में रहने पर भी प्रत्येक के परिणाम भिन्न-भिन्न हैं, कोई किसी के परिणाम में बाधा नहीं पहुँचाता। बिच्छू ने काटा, इसकारण आत्मा के परिणाम बिगड़े ह्न ऐसा नहीं है। आत्मा के परिणामों में आत्मा स्वयं से ही परिणमित होता है। यदि उस समय बिच्छू के प्रति द्वेष होता है तो वह द्वेष का परिणाम आत्मा से स्वयं से ही हुआ है, बिच्छू के कारण नहीं हुआ; क्योंकि कोई द्रव्य किसी अन्य द्रव्य को न बाधा उत्पन्न करता है और न मदद करता है।''

गुरुदेवश्री ने बिच्छू का उदाहरण देकर पाठकों को यह सोचने के लिए उत्प्रेरित किया है कि ह्न अरे ! क्या यह भी संभव है कि बिच्छू के काटने से जीव को दु:ख नहीं होता। प्रत्यक्ष में तो देखने में ऐसा ही आता है कि बिच्छू के काटने से ही व्यक्ति छटपटाता है, दु:खी होता है; परन्तु यदि ऐसा हो तो सभी को बिच्छू के काटने पर दु:खी होना चाहिए; किन्तु देह से भिन्न आत्मा को जानने-मानने और आत्मा के ध्यानस्थ संतों को ऐसा नहीं होता। मुनि सुकुमाल, सुकौशल और गजकुमार मुनिराजों के उदाहरण आगम में देखे जा सकते हैं, जिन्हें दु:ख का वेदन होता भी है, उन्हें अपने आत्मद्रव्य की तत्समय की योग्यता से होता है, न कि पर के कारण। उससमय परद्रव्य का अतिनिकट का निमित्त-नैमित्तिक भाव देखकर व्यवहार से ऐसा कहने में आता है कि बिच्छू आदि पर के कारण दुख हुआ। अत: यह सिद्ध है कि शरीर में एकत्व-ममत्व ही दु:ख का कारण है, बिच्छू नहीं। ●

गाथा ८

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।
भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का।।8।।
सत्ता जनम-लय-ध्रौव्यमय अर एक सप्रतिपक्ष है।
सर्वार्थ थित सविश्वरूप-रु अनन्त पर्ययवंत है।।

सत्ता उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक एक सर्व पदार्थस्थित, सविश्वरूप, अनन्तपर्यायमय और सप्रतिपक्ष है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में स्पष्टीकरण करते हैं कि ''यहाँ अस्तित्व का स्वरूप कहा है। अस्तित्व अर्थात् सत्ता नामक सत् का भाव सत्त्व। यहाँ सत्त्व का अर्थ है, सतपना, अस्तित्वपना या विद्यमापना।

विद्यमान वस्तु अर्थात् सत् स्वरूप वस्तु न तो सर्वथा नित्य ही होती है और न सर्वथा क्षणिकरूप ही होती है। यदि सर्वथा नित्य माना जाय तो सर्वथा नित्य वस्तु को क्रमभावी भावों का अभाव होने से अर्थात् परिणमन न होने से विकार कैसे होगा, परिवर्तन कहाँ से होगा ? और सर्वथा क्षणिक मानने से क्षणिक वस्तु में प्रत्यभिज्ञान का अभाव होने से एक प्रवाहपना नहीं रह सकेगा। वस्तु सर्वथा क्षणिक हो तो 'यह वही वस्तु है, जिसे पहले देखा था' ह्न ऐसा ज्ञान कैसे होगा ?

इसलिए प्रत्यभिज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष व परोक्ष का जोड़रूप ज्ञान के हेतुभूत किसी एक स्वरूप से ध्रुव रहती हुई और किन्हीं दो क्रमवर्ती स्वरूपों से नष्ट होती हुई तथा उत्पन्न होती हुई एक ही काल में उत्पाद-व्यय-ध्रुव ह्न इन तीन अंशवाली अवस्था को धारण करती हुई वस्तु को सत् समझना चाहिए। इसीलिए सत्ता भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक है; क्योंकि भाव और भाववान अर्थात् सत्ता और वस्तु का कथंचित् एक स्वरूप होता है।

वह सत्ता **एकरूप** है; क्योंकि वह त्रि लक्षणवाले समस्त वस्तु विस्तार का सादृश्य सूचित करती है। वह सत्ता सर्व पदार्थों में स्थित है; क्योंकि उसके कारण ही सर्व पदार्थों में उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप त्रिलक्षण की तथा सत् की प्रतीति होती है। वह सत्ता **सविश्वरूप** है; क्योंकि वह विश्व के रूपों सहित अर्थात् समस्त वस्तुविस्तार के त्रिलक्षणवाले स्वभाव सहित है। वह सत्ता **अनन्त पर्यायमय** भी है, क्योंकि वह त्रिलक्षणवाली अनन्त द्रव्य-पर्यायरूप व्यक्तियों से व्याप्त है।''

आचार्य अमृतचन्द्र आगे कहते हैं कि ह्न ''सत्ता का स्वरूप ऐसा होने पर भी वह वस्तुत: निरंकुश नहीं है अर्थात् नि:प्रतिपक्ष नहीं है, विरुद्ध पक्ष रहित नहीं है। सप्रतिपक्ष है, प्रतिपक्ष सहित है। सामान्य-विशेष सत्ता कर जो ऊपर वर्णन किया है, वैसी होने पर भी 'सर्वथा' वैसी नहीं है अर्थात् एकान्त पक्ष वाली नहीं है, उसका दूसरा पक्ष भी है।

(1) सत्ता का प्रतिपक्ष असत्ता है, (2) त्रिलक्षण का प्रतिपक्ष अत्रि-लक्षण है, (3) एक का प्रतिपक्ष अनेकपना है, (4) सर्व पदार्थ स्थित का प्रतिपक्ष एक पदार्थ स्थितपना है, (5) सविश्वरूप का प्रतिपक्ष एकरूपना है, (6) अनन्त पर्यायमयता का प्रतिपक्ष एक पर्यायपना है।

इसी विषय को स्पष्ट करते हुए टीका में आगे कहा गया है कि सत्ता दो प्रकार की है ह्न एक महासत्ता और दूसरी अवान्तरसत्ता।

सर्व पदार्थ समूह में व्याप्त होनेवाली, सादृश्य अस्तित्व को सूचित करने वाली सामान्यसत्ता ही **महासत्ता** है तथा एक-एक निश्चित वस्तु में रहनेवाली, स्वरूप अस्तित्व को सूचित करनेवाली **अवान्तरसत्ता** है। इसे विशेष सत्ता भी कहते हैं।

ध्यान रहे, महासत्ता अवान्तरसत्तारूप से असत्ता है और अवान्तरसत्ता महासत्तारूप से असत्ता है। इसप्रकार दोनों सत्ताओं में असत्तापना घटित होता है। इसीप्रकार अन्यत्र छहों बोलों में घटित किया जा सकता है।

इसप्रकार अपेक्षा समझने पर सभी कथन निर्दोष हैं; क्योंकि सत्तास्वरूप वस्तु का कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो नयों के आधीन है।

भावार्थ में उपर्युक्त कथन के स्पष्टीकरण में उसी महासत्ता में त्रिलक्षण एवं अत्रिलक्षणा धर्म घटित करते हुए कहा है कि ह्न महासत्ता उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य ह्न ऐसे तीन लक्षणवाली है, इसलिए वह त्रिलक्षणा है तथा वस्तु उत्पन्न होनेवाले स्वरूप का अकेला उत्पाद ही एक लक्षण है, नष्ट होनेवाले स्वरूप का अकेला व्यय ही एक लक्षण है और ध्रुव रहनेवाले स्वरूप का अकेला ध्रुव ही एक लक्षण है; इसलिए उन तीन स्वरूपों में से प्रत्येक की अवान्तर सत्ता एक-एक लक्षणवाली ही होने से 'अत्रिलक्षणा' है।

इसीप्रकार महासत्ता लोक के समस्त पदार्थों में सत्-सत्-सत् ह्न ऐसा

समानपना दर्शाती है; इसलिए वह एक है तथा एक वस्तु की स्वरूपसत्ता अन्य किसी वस्तु की स्वरूपसत्ता नहीं है; इसलिए जितनी वस्तुएँ उतनी स्वरूप सत्तायें हैं। ऐसी स्वरूप सत्तायें अर्थात् अवान्तरसत्तायें अनेक हैं।''

इसप्रकार सामान्य-विशेषात्मक सत्ता महासत्तारूप तथा अवान्तरसत्ता रूप होने से (1) सत्ता भी है और असत्ता भी है। (2) त्रिलक्षणा भी है और अत्रिलक्षणा भी है। (3) एक भी है और अनेक भी है। (4) सर्व पदार्थ स्थित भी है और एक पदार्थ स्थित भी है। (5) सविश्वरूप भी है और अविश्वरूप भी है (6) अनन्त पर्यायमय भी है और पर्यायमय भी है।

इस आठवीं गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि ''पदार्थ के **अस्तित्व** का नाम ही सत्ता है और महासत्तारूप से लोक के सभी पदार्थों का अस्तित्व है; परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सभी स्वरूप मिलकर एक हैं। महासत्ता अर्थात् सब अपने-अपने स्वरूप अस्तित्व में हैं। सब हैं अर्थात् निगोदिया भी हैं और सिद्ध भी हैं, चेतन भी हैं और जड़ भी हैं। सब अपने-अपने स्व-चतुष्टय से पूर्णतया स्वतंत्र अस्तित्व में हैं ह्न ऐसा ज्ञान होते ही आत्मा अकेला ज्ञाता रह जाता है। सब अपने-अपने अस्तित्व में हैं ह्न ऐसा जानने से स्वत: वीतरागभाव आता है।

प्रतिपक्षसहित का खुलासा करते हुए गुरुदेव कहते हैं कि ह्न महासत्तारूप से महासत्ता सत् है; परन्तु अवान्तरसत्तारूप से महासत्ता नहीं है, क्योंकि महासत्ता में भेद नहीं पड़ते। महासत्ता प्रतिपक्ष सहित है। जैसे कि ह्न

1. महासत्ता एक है, अवान्तरसत्तायें अनेक हैं।

2. महासत्ता सामान्य अस्तित्व रूप से समस्त पदार्थों में व्यापक है, अवान्तर सत्ता एक पदार्थ में व्यापक है।

3. महासत्ता अनेक स्वरूप है, अवान्तरसत्ता एक स्वरूप है।

4. लोकालोक यदि महासत्ता है तो एक-एक द्रव्य अवान्तरसत्ता है। वस्तुत: छहों द्रव्यों के संग्रह का नाम ही महासत्ता है।

5. यदि एक द्रव्य को महासत्ता कहें तो उसके अन्तर्गत भेद अवान्तरसत्ता है।

महासत्ता का अर्थ यह नहीं कि सभी पदार्थों के बीच महासत्ता का अलग डोरा पिरोया हुआ है अथवा सभी पदार्थों का वह एक अधिष्ठान है। यहाँ महासत्ता का अर्थ तो इतना ही है कि सभी पदार्थों में अस्तित्व है। सभी पदार्थों के सामान्य अस्तित्व को एकसाथ कहने का नाम ही महासत्ता है। पहले 'सब हैं' ऐसी महासत्ता स्थापित करके फिर उसमें अवान्तरसत्तारूप विशेष भेद पड़ते हैं कि ये जीव हैं, ये अजीव हैं।''

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी महासत्ता की चर्चा में से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अवान्तरसत्ता और महासत्ता की सिद्धि करके आचार्यदेव ने श्रुतज्ञान में अनन्त केवलज्ञान को समा दिया है। वे कहते हैं ''देखो, श्रुतज्ञान महासत्ता और अवान्तरसत्ता ह्न दोनों को जानता है और महासत्ता के अन्तर्गत अनन्त केवली और केवलज्ञान का सम्पूर्ण विषय अर्थसमय के रूप में आ जाता है तथा अवान्तरसत्ता में वे अनन्त केवली और उनके केवलज्ञान के विषयभूत पदार्थ भिन्न-भिन्न हैं ह्न ऐसा भी श्रुतज्ञान जान लेता है।

ऐसे सम्यक् श्रुतज्ञान द्वारा ज्ञानी जीवों की परिणति स्वत: स्वभाव-सन्मुख होकर वीतरागभावरूप होने लगती है; क्योंकि सम्यक श्रुतज्ञान से ऐसे स्वतंत्र वस्तुस्वरूप के यथार्थ निर्णय से ज्ञानी जीवों का कर्तृत्व-भोक्तृत्व समाप्त हो जाता है। वे जगत के ज्ञाता-दृष्टा रह जाते हैं। ●

मई माह में आनेवाली तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

10 **मई**	–	भगवान श्रेयांसनाथ का गर्भकल्याणक
13 **मई**	–	भगवान विमलनाथ का गर्भकल्याणक
15 **मई**	–	भगवान अनंतनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
17 **मई**	–	भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप व मोक्ष कल्याणक
18 **मई**	–	भगवान अजितनाथ का गर्भकल्याणक
23 **मई**	–	भगवान धर्मनाथ का मोक्षकल्याणक
31 **मई**	–	भगवान सुपार्श्वनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक

आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविर दिनांक 8 अप्रैल से 14 अप्रैल, 2004 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिन दिनांक 8 अप्रैल को प्रात: भव्य जुलूस के पश्चात् श्री आदिनाथ दि. जिनमंदिर में जिनेन्द्र पूजन हुई एवं बालकों को शिविर की शिक्षण सामग्री प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री भबूतमलजी भण्डारी ने अपने उद्बोधन में शिविर के महत्त्व को स्पष्ट किया, जिससे जिज्ञासु बालकों में प्रथम दिन से ही शिविर को लेकर उत्साह जागृत हुआ।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: 5.30 से रात्रि 10 बजे तक प्रात: प्रार्थना, व्यायाम, जिनेन्द्रपूजन, सामूहिक कक्षा एवं शिक्षण कक्षायें चलती थी। दोपहर में विभिन्न कक्षाएँ तथा रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति, तत्त्वचर्चा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया।

शिविर के कुशल संचालन एवं अध्यापन का कार्य शिविर प्रशिक्षक पण्डित किशोरकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित विवेक जैन सिवनी ने किया। शिविर में श्रीमती प्रियंका पंचोलिया एवं कु. मोनिका जैन का सहयोगी अध्यापक के रूप में सक्रिय योगदान रहा।

दिनांक 13 अप्रैल, 04 को समस्त विद्यार्थियों की लिखित व मौखिक परिक्षाएँ ली गई; जिसमें समस्त छात्रों ने उत्साह से भाग लिया एवं 100 प्रतिशत का परिणाम लाकर अपनी अभूतपूर्व लगन का परिचय दिया।

दिनांक 14 अप्रैल, 04 को समापन समारोह में पण्डित विवेक जैन सिवनी द्वारा निर्देशित लघु नाटिका क्षणभंगुर संसार एवं आध्यात्मिक कव्वाली का आयोजन किया गया।समस्त उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रमाणपत्र एवं पारितोषिक प्रदान किये गये।

इस अवसर पर श्री भबूतमलजी भण्डारी ने अपने उद्गार व्यक्त किये तथा श्री चंपालालजी भण्डारी ने शिविर में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करनेवाले साधर्मियों का आभार व्यक्त किया। सम्पूर्ण समाज ने इसप्रकार के शिविरों का पुन: पुन: आयोजन करने हेतु ट्रस्ट से निवेदन किया।

ह्न चम्पालाल भण्डारी

विधान सानन्द सम्पन्न

1. **जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयोजन एवं वीतराग-विज्ञान मण्डल जबलपुर के तत्त्वावधान में श्री महावीर दि. जिनमंदिर, बड़ाफुहारा में दिनांक 23 से 29 मार्च, 2004 तक श्री चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर के विधान की जयमाला एवं पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति विषय पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त पण्डित विरागजी शास्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये ।

विधान में स्थानीय विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी एवं पण्डित श्रेणिकजी का सहयोग रहा। **ह्न अजित जैन**

2. **नातेपुते (महा.) :** यहाँ श्री आराधना महिला मण्डल एवं समस्त दिगम्बर जैन समाज नातेपुते के तत्त्वावधान में दिनांक 18 अप्रैल से 20 अप्रैल, 2004 तक त्रिदिवसीय श्री एक सौ सत्तर तीर्थंकर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर (जेवर) द्वारा सम्पन्न कराये गये।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: पूजन-विधान तथा दोपहर एवं रात्रि में पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचन हुए। सायंकाल बालकक्षा के पश्चात् जिनेन्द्रभक्ति तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त पण्डित नेमिनाथजी शास्त्री बाहुबली एवं ब्र. जितेन्द्रजी चंकेश्वरा अकलूज के प्रवचन का लाभ भी मिला। **ह्न अनिला गांधी**

3. **छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में नवनिर्मित श्री पार्श्वनाथ दि. जिनमंदिर गांधीगंज में यागमण्डल विधान का आयोजन किया गया; जिसकी सम्पूर्ण विधि पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर ने सम्पन्न कराई।

सायंकालीन सभा में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री के मार्मिक प्रवचनों का लाभ सकल समाज को प्राप्त हुआ। **ह्न दीपकराज जैन**

महावीर जयंती पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर के तत्त्वावधान में भगवान महावीरस्वामी के जन्मजयंती के पावन अवसर पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 2 अप्रैल, 04 को पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर द्वारा महावीर के जीवनदर्शन पर मार्मिक प्रवचन हुआ एवं रात्रि में फैडरेशन के सदस्यों ने **महावीर के द्वारा प्रतिपादित दर्शन** विषय पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया।

3 अप्रैल, 04 को नगर की विशाल शोभायात्रा में फैडरेशन के सदस्यों ने सक्रियता से भाग लिया तथा रात्रि में पण्डित विरागजी शास्त्री के काव्यमय संचालन के साथ आध्यात्मिक कविसम्मेलन का आयोजन किया गया।

4 अप्रैल, 2004 को प्रात: पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा का भगवान महावीर के सिद्धान्तों पर प्रवचन हुआ एवं रात्रि में कु. निशा जैन के निर्देशन में बालकों द्वारा संवादमय नाटिका प्रस्तुत की गई।

फैडरेशन की टेबिल से...

फैडरेशन की नवीन कार्यकारिणियों का गठन

1. **पिड़ावा (राज.):** यहाँ दिनांक 8 मार्च, 04 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा पिड़ावा की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। फैडरेशन के समस्त सदस्यों ने निर्विरोधरूप से इसे मान्यता प्रदान की; जिसमें **संरक्षक**-श्री कमलचन्दजी प्रेमी, श्री नेमीचन्दजी जैन एवं नेमीचन्दजी गेलानीवाले, **परामर्शदाता**-श्री नागेशकुमारजी जैन एवं श्री धनसिंहजी 'ज्ञायक', **अध्यक्ष**-श्री सतीशचन्दजी जैन, **उपाध्यक्ष**-श्री दीपचन्दजी जैन गेलानीवाले, **मन्त्री**-पण्डित मनीषजी शास्त्री, **कोषाध्यक्ष**-श्री अभयकुमारजी जैन, **शाखा प्रबन्धक**-श्री धनसिंहजी जैन, **शाखा सचेतक**-पण्डित आशीषजी शास्त्री, **प्रचारमन्त्री**-श्री ललितकुमारजी जैन एवं श्री मुकेशजी जैन, **संगठन मन्त्री**-श्री राकेशजी प्रेमी एवं श्री प्रकाशसिंहजी जैन, **सांस्कृतिक मन्त्री**-श्री कौशलकुमारजी जैन एवं **कार्यकारिणी सदस्य**-श्री सुखमालजी जैन, श्री ऋषभकुमारजी जैन, श्री जयकुमारजी जैन, श्री अंकितकुमारजी जैन एवं श्री विमलकुमारजी जैन को चुना गया। **ह्न सतीश जैन**

2. **मौ (म.प्र.):** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा मौ की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। फैडरेशन के समस्त सदस्यों ने निर्विरोधरूप से इसे मान्यता प्रदान की; जिसमें **परम संरक्षक**-श्री महेशचन्दजी जैन, **संरक्षक**-श्री वीरेन्द्रकुमारजी सुहाने एवं श्री शैलेन्द्रकुमारजी सुहाने, **अध्यक्ष**-श्री नरेशचन्द्रजी जैन, **उपाध्यक्ष**-श्री अनिलकुमारजी जैन गयेलिया, **सचिव**-पुष्पेन्द्रकुमार जैन, **उपसचिव**-श्री राजेशकुमार गयेलिया, **कोषाध्यक्ष**-श्री अरविन्दकुमारजी जैन, **कैप्टन**-श्री मुकेशकुमारजी सर्राफ, **उपकैप्टन**-श्री धीरेन्द्रकुमारजी सर्राफ, **प्रचारमन्त्री**-श्री धर्मेन्द्रकुमार ठाकुर, **माइक एवं विद्युत मन्त्री**-श्री सोनु टकसारी, श्री अंशुल जैन, श्री रमेश चौधरी, **कार्यकारिणी सदस्य**-श्री जयदीपजी गयेलिया, श्री राकेशजी जमोरिया, श्री पवनजी सर्राफ, श्री सुधीरजी सर्राफ, श्री चेतनप्रकाशजी सर्राफ को चुना गया।

इसके अतिरिक्त 16 साधारण सदस्यों को भी इसमें जोड़ा गया।

इसी अवसर पर नवीन गठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भी सम्पन्न हुआ तथा यह भी तय किया गया की प्रत्येक रविवार फैडरेशन के सदस्यों द्वारा सामुहिक जिनेन्द्र पूजन एवं एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। **ह्न पुष्पेन्द्र जैन**

वैराग्य समाचार

1. उमराला में जन्में कन्नौज निवासी श्री सवाईलालजी का दिनांक 18 अप्रैल को प्रात: देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त सरलस्वभावी एवं धार्मिकरुचिवाले व्यक्ति थे। जीवनभर अनेक धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं में आपका सक्रिय सहयोग रहा ।

2. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जितेन्द्र वि. राठी की नानीजी श्रीमती कमलाबाई टावरी, काटोल का दिनांक 23 अप्रैल, 04 को देहावसान हो गया है। आप जिनधर्मप्रेमी, सरलस्वभावी एवं स्वाध्यायी थीं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 6

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अगली दो गाथाओं में इसी अतीन्द्रियज्ञान अर्थात् केवलज्ञान की महिमा गाई गई है। फिर अंत में २३ वीं गाथा में इसका मतार्थ प्रस्तुत किया है; जो इसप्रकार है ह्न

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगयं॥२३॥

(हरिगीत)

यह आत्म ज्ञानप्रमाण है अर ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है।
हैं ज्ञेय लोकालोक इस विधि सर्वगत यह ज्ञान है॥

आत्मा ज्ञानप्रमाण है और ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है तथा ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है।

कुछ मतवाले ऐसे हैं जो ऐसा कहते हैं कि आत्मा सर्वगत है अर्थात् आत्मा सम्पूर्ण लोकालोक में व्याप्त है। एक ही आत्मा है और वही सर्वत्र व्याप्त है; जो हमारे शरीर में है, वह उसका ही अंश है; परन्तु जैनदर्शन कहता है कि ऐसा कोई सर्वगत आत्मा नहीं है।

जैनदर्शन में भी आत्मा को सर्वगत कहा है; परन्तु जैनदर्शन में समागत सर्वगत शब्द का अर्थ भिन्न है।

जैनदर्शन यह मानता है कि आत्मा शरीर प्रमाण है। कुछ लोग ऐसा मानते है कि यह आत्मा शरीर में भी शरीर के मध्य अणु कणिका मात्र है; जो हृदयस्थान में विराजमान है। वह पूरे शरीर में नहीं है।

इसप्रकार भिन्न-भिन्न मत हैं।

आत्मा में असंख्यात प्रदेश हैं एवं प्रत्येक प्रदेश में ज्ञान है। जहाँ-जहाँ आत्मा के प्रदेश हैं; वहाँ-वहाँ ज्ञान है। जहाँ-जहाँ आत्मा के प्रदेश नहीं हैं; वहाँ-वहाँ ज्ञान भी नहीं है।

ज्ञान लोकालोक को जानता है। ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है अर्थात् जितने ज्ञेय हैं; उन सभी को ज्ञान जानता है; इस अपेक्षा से ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है। 'गम्' धातु के दो अर्थ होते हैं ह्न जाना और जानना। यहाँ आचार्य कहते हैं कि इस आत्मा ने अलोकाकाश को जाना तो मानो वह अलोकाकाश में पहुँच ही गया; जबकि लोकाकाश के बाहर कोई भी द्रव्य जाता नहीं है; फिर भी उसे जाना या पहुँचना कहते हैं।

आत्मा के लिए लोकालोक ज्ञेय है, इसका अर्थ है आत्मा लोकालोक तक चला गया। इसप्रकार जानने की अपेक्षा से ही आत्मा को सर्वगत कहा गया है।

जिस-जिस को आत्मा जानता है; वह वहाँ तक पहुँचता है। सूर्य का प्रकाश जहाँ-जहाँ पहुँचा; वहाँ-वहाँ सूरज पहुँच गया ह्न ऐसा हम बोलते हैं। जहाँ किरण पहुँचती है, वहाँ सूरज पहुँचा ह्न ऐसा भी हम बोलते ही हैं और जहाँ किरण भी नहीं पहुँची ऐसे तलघर में बैठे-बैठे हम बता सकते हैं कि अभी दिन है या रात। इसका अर्थ यह है कि सूर्य ने अपनी सत्ता का ज्ञान वहाँ भी करा दिया, सूर्य वहाँ भी पहुँच गया।

इसप्रकार जहाँ उसकी किरण पहुँची, वहाँ तो वह पहुँचा ही; पर जहाँ उसकी किरण नहीं पहुँची, वहाँ भी वह पहुँच गया।

ऐसे ही भगवान आत्मा के प्रदेश जहाँ तक जाते हैं; वहाँ तक तो वह आत्मा जाता ही है; किन्तु जहाँ तक आत्मा ने जाना; एक अपेक्षा से आत्मा वहाँ तक पहुँच गया ह्न ऐसा भी कहा जाता है। इसी अपेक्षा से आचार्यदेव ने आत्मा को सर्वगत कहा है।

आत्मा ज्ञानप्रमाण है अर्थात् ज्ञान के बराबर है।

यदि कोई ऐसा कहे कि ज्ञान बड़ा है और आत्मा छोटा; क्योंकि ज्ञान तो लोकालोक में चला गया, पर आत्मा तो शरीर के प्रदेशों में ही रहता है। वह लोकाकाश के बाहर तो जा नहीं सकता है।

आचार्य कहते हैं कि ज्ञान गुण है एवं आत्मा द्रव्य है। द्रव्य के बिना गुण नहीं रह सकता है तो आश्रय के बिना ज्ञान वहाँ (अलोकाकाश में) कैसे रहेगा?

यदि कोई ऐसा कहे कि हम ज्ञान को छोटा मानेंगे और आत्मा को बड़ा; क्योंकि ज्ञान जैसे अनंत गुण आत्मा में है। ज्ञान आत्मा का अनंतवाँ भाग है; क्योंकि आत्मा अनंत गुणों का पिण्ड है।

ज्ञान को छोटा मानने पर ज्ञान की मर्यादा के बाहर जो आत्मा होगा, वह आत्मा अज्ञानरूप हो जाएगा; परन्तु आत्मा तो ज्ञानस्वरूप ही है।

ऐसे-ऐसे अनेक तर्क देकर आचार्यदेव ने यह सिद्ध किया है कि आत्मा ज्ञानप्रमाण है। जितना आत्मा, उतना ज्ञान एवं जितना ज्ञान, उतना आत्मा।

आचार्य कहते हैं कि ज्ञान का ऐसा स्वभाव है कि वह ज्ञेयों में गये बिना ही ज्ञेयों को जान लेता है और ज्ञेयों का ऐसा स्वभाव है कि वे अपनी जगह रहे और ज्ञान में जाने जावे।

यदि हमें व आपको मिलना है तो या तो आपको हमारे पास आना होगा या फिर हमें आपके पास जाना होगा; इसके बिना मिलना कैसे होगा? इसीप्रकार ज्ञान ज्ञेयों के पास नहीं गया, ज्ञेय ज्ञान के पास नहीं आये तो फिर मिले कैसे ?

अरे भाई ! दूर रहकर भी ज्ञान ज्ञेयों को जान लेता है तथा ज्ञेय ज्ञान में जान लिए जाते हैं ह्न ज्ञान का तथा ज्ञेयों का ऐसा ही विचित्र स्वभाव है।

ज्ञेय का स्वभाव है ज्ञान में जाये बिना अपना स्वभाव/स्वरूप भासित करा दे एवं ज्ञान का यह स्वरूप है कि ज्ञेयों के पास गये बिना, उनमें हस्तक्षेप किए बिना उनके स्वरूप को जान ले।

ऐसा जो ज्ञान का स्वभाव है; वह अतीन्द्रिय ज्ञान में प्रगट हो गया है। अतीन्द्रिय ज्ञान में यह सामर्थ्य है कि वह सुमेरु पर्वत के पास गए बिना भी उसे जान लेगा। सुमेरु पर्वत को तोड़े बिना उसके भीतर क्या है? वह उसे भी जान लेगा। ऐसे जानने में परज्ञेय को कभी कोई समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती।

कोई कहे कि हमें आपकी जाँच करना है; इसलिए खड़े हो जाओ, बैठ जाओ, कपड़े खोलो, औंधे हो जाओ।

तो हम कहेंगे कि यह हमसे नहीं होगा।

यदि कोई यह कहे कि दूर खड़े-खड़े ही हम आपको जान लेंगे।

तो फिर हम यही कहेंगे कि जान सकते हो तो जान लो, हमें क्या

करना है। इसप्रकार यदि हमें कोई परेशानी नहीं हो और कोई हमें जाने तो जान ले, हमें क्या है ?

ऐसे ही ज्ञान के जानने से यदि ज्ञेयों को भी कोई समस्या होती तो ज्ञेय भी ऐतराज करते; किन्तु उन्हें तो कोई समस्या नहीं है; क्योंकि ज्ञान उसके पास आएगा भी नहीं और ज्ञेयों को भी ज्ञान के पास जाना नहीं है, ज्ञेय अपना कार्य करते रहेंगे और सर्वज्ञ भगवान उसे जान लेंगे ह्न ज्ञान का स्वभाव ऐसा ही है। ●

तीसरा प्रवचन

भगवान की दिव्यध्वनि के सार इस प्रवचनसार परमागम के ज्ञान तत्त्वप्रज्ञापन पर चर्चा चल रही है। इसमें प्रारम्भ की १२ गाथाओं में मंगलाचरण, शुद्धोपयोगरूप धर्म, उसका स्वरूप एवं फल के संदर्भ में वर्णन किया। १३ वीं से २० वीं गाथा तक शुद्धोपयोग के फलस्वरूप अतीन्द्रिय ज्ञान एवं अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है; इसकी चर्चा की।

तत्पश्चात् २१ वीं गाथा से ५२वीं गाथा तक ज्ञानाधिकार की चर्चा की। यहाँ आत्मा के ज्ञानस्वभाव की चर्चा नहीं की, अपितु उस अतीन्द्रिय ज्ञान की चर्चा की; जो शुद्धोपयोग से उपलब्ध होता है।

शुद्धात्मा के आश्रय से जो अनंतज्ञान-केवलज्ञान-सर्वज्ञता प्रगट होती है, उसकी चर्चा इस ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन के ज्ञानाधिकार में है। इसलिए इसे हम अतीन्द्रिय ज्ञानाधिकार भी कह सकते हैं।

'आत्मा ज्ञानप्रमाण है' अभी यह चर्चा चल रही है।

यदि हम ज्ञान को छोटा और आत्मा को बड़ा मानेंगे तो अव्याप्ति दोष आएगा;क्योंकि ज्ञानलक्षण संपूर्ण आत्मा में व्याप्त नहीं होगा। अत: आत्मा को ज्ञानप्रमाण ही मानना चाहिए।

हीणो जदि सो आदा तण्णाणमचेदणं ण जाणादि।
अहिओ वा णाणादो णाणेण विणा कहं जाणादि।।२५।।

(हरिगीत)

ज्ञान से हो हीन अचेतन ज्ञान जाने किसतरह।
ज्ञान से हो अधिक जिय किसतरह जाने ज्ञान बिन।।

यदि यह आत्मा ज्ञान से कम हो तो ज्ञान अचेतन हो जाने से जानता नहीं है तथा यदि यह आत्मा ज्ञान से अधिक हो तो ज्ञान के बिना वह कैसे जान सकता है ?

इसलिए आचार्यदेव ने आगे की गाथा में भगवान को सर्वगत कहा हैह्न

सव्वगदो जिणवसहो सव्वे वि य तग्गया जगदि अट्ठा।
णाणमयादो य जिणो विसयादो तस्स ते भणिदा।।२६।।

(हरिगीत)

हैं सर्वगत जिन और सर्व पदार्थ जिनवरगत कहे।
जिन ज्ञानमय बस इसलिए सब ज्ञेय जिनके विषय हैं।।

ज्ञानमय होने से गणधरादि में प्रधान सर्वज्ञ भगवान सर्वगत हैं तथा उन सर्वज्ञ भगवान के ज्ञेयरूप विषय होने से जगत में स्थित सभी पदार्थ सर्वज्ञगत है ह्न ऐसा कहा गया है।

सभी पदार्थ जिनवरगत है अर्थात् संपूर्ण पदार्थ भगवान के ज्ञान के ज्ञेय बन गए हैं; इसलिए भगवान को सर्वव्यापी कहा गया है।

समयसार में तो स्पष्ट कहा गया है कि ह्न

'नास्ति सर्वोऽपि संबंध: परद्रव्यात्मतत्त्वयो:।'[१]

परद्रव्य और आत्मतत्त्व में कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

यह ज्ञेय-ज्ञायक संबंध भी तो एक संबंध है। सम्बन्ध है इसलिए यह पराधीनता का द्योतक है।

तात्पर्य यह है कि 'आत्मा परद्रव्य को जानता है' ह्न यदि हम ऐसा मानेंगे तो ज्ञेय-ज्ञायक संबंध हो जाएगा और आत्मा पराधीन हो जाएगा; ज्ञेयों के आधीन हो जाएगा अथवा ज्ञेय आत्मा के आधीन हो जाएँगे। इसलिए दोनों ही पराधीन हो जाएँगे।

जैसे ह्न एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति का हाथ पकड़ लिया और बोला कि 'अब मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा।' इसमें जिसका हाथ पकड़ा वह भी बँधा और जिसने हाथ पकड़ा वह भी बंध गया; क्योंकि जबतक वह उसका हाथ नहीं छोड़े, तबतक वह कहीं नहीं जा सकता है। इसप्रकार दोनों बँधे हुए हैं।

ऐसे ही ज्ञान ज्ञेय को जाने तो अकेले ज्ञेय ही नहीं बँधे, ज्ञान भी बंध जाएगा। ज्ञान को ज्ञेयों के पास जाना पड़ेगा अथवा ज्ञेयों को ज्ञान के पास आना पड़ेगा।

मान लीजिए, हम आपके घर आए या आप हमारे घर आए; बंधन तो दोनों को ही हो गया। उतने समय दोनों को ही रुकना पड़ा।

बहुत से लोग कहते हैं कि भाईसाहब ! हमें आपसे मिलना है, तो मैं कहता हूँ कि 'क्या मैं आपके पास आ जाऊँ ?'

वे कहते हैं कि 'नहीं, नहीं; हम ही आपके पास आ जायेंगे।'

दोनों यह जानते हैं कि यदि इन्होंने यह कह दिया कि मैं आपके घर आकर मिलूँगा, तो अब मैं घर में बंध गया। वे आए तो आए और नहीं आए तो नहीं आए। दो घंटे पहले भी आए और दो घंटे लेट भी आए ह्न इसप्रकार मैं तो चार घंटे के लिए बंध गया। वे दोनों बंधना नहीं चाहते हैं; इसलिए दोनों 'मैं ही आ जाऊँगा' ह्न ऐसा कहते हैं।

वे कहते हैं कि 'आप तो घर पर ही रहो, आराम से।' अर्थात् तुम बंधो और मुझे समय मिलेगा तो मैं आऊँगा और यदि समय नहीं मिला तो नहीं आऊँगा।

यदि वह उनके घर पर पहुँच जाता है और वे घर पर नहीं मिलते हैं तो यह बड़ा अपराध हो जाता है। वह कहता है 'आपसे बात हो गई थी, फिर भी आप घर पर नहीं रहे और मैं मुफ्त में ही आपके घर के चक्कर लगाता रहा।'

इसीप्रकार कुछ लोगों को यह शंका होती है कि ज्ञान ज्ञेयों को जानेगा तो ज्ञान ज्ञेयों से बंध जाएगा और ज्ञेय ज्ञान से बंध जाएगें तथा दो द्रव्यों के मध्य जो पृथकतारूप वज्र की दीवार है, वह टूट जाएगी; परद्रव्य और आत्मतत्त्व में कोई भी सम्बन्ध नहीं है ह्न यह महासिद्धान्त खण्डित हो जाएगा। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 115वीं जन्मजयंती पर अनेक कार्यक्रम सम्पन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में गुरुदेवश्री की जन्मजंयती के पावन अवसर पर दिनांक 25 अप्रैल, 04 को रात्रि 8 बजे गुरुदेवश्री के जीवन परिचय से संबंधित वी.सी.डी का प्रसारण किया गया, तदुपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा व ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री मंचासीन थे।

गोष्ठी में श्री हुकमचन्दजी जैन तथा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने गुरुदेवश्री के जीवन-चरित्र पर अपने विचार व्यक्त किये। मंगलाचरण पण्डित राजेन्द्रजी पाटील ने एवं संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

2. दिल्ली : यहाँ आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 10 एवं 11 अप्रैल, 04 को गुरुदेवश्री की जन्मजयन्ती उपकारदिवस के रूप में मनाई गई तथा द्विदिवसीय पंचपरमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके द्वारा प्रवर्तित अनेक सिद्धान्तों की विस्तृत विवेचना की। इसके अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, डॉ. सुदीप जैन, पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा आदि विद्वानों ने भी गुरुदेव के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला।

शनिवार दिनांक 10 अप्रैल को श्री जैमिनी हरियाणवी के मुख्य कवित्व में आध्यात्मिक कविसम्मेलन का आयोजन किया गया।

अन्त में श्री आदीश जैन ने आगन्तुक समस्त आत्मार्थियों का आभार व्यक्त किया। संचालन पण्डित संदीप जैन शास्त्री ने किया। **ह्न राकेश जैन**

3. देवलाली (महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली में श्रीमती मंजुलाबेन कविनभाई परिख परिवार की ओर से दिनांक 17 अप्रैल से 21 अप्रैल 2004 तक गुरुदेवश्री का जन्मजयंती महोत्सव अत्यन्त आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनसार ग्रन्थ की प्रारंभिक 33 गाथाओं पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 17 अप्रैल को शोभायात्रा एवं झण्डारोहण से किया गया। दिनांक 21 अप्रैल को गुरुदेवश्री के जन्मदिवस पर प्रात: प्रभातफेरी के पश्चात् स्मरणांजली सभा का आयोजन किया गया।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं शिक्षण कक्षाओं का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री, रहली एवं पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री, शाहगढ़ ने सम्पन्न कराये।

4. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 115 वीं जन्मजयंती श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा फुहारा, जबलपुर में मनाई गई।

इस अवसर पर दिनांक 21 अप्रैल, 04 को पण्डित राजेन्द्रकुमारजी द्वारा सोनगढ़ के जिनमन्दिरों पर रचित आध्यात्मिक पूजन की गई। तदुपरान्त श्री अशोककुमारजी की अध्यक्षता में **गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र** विषय पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर ने किया।

रात्रि में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी का गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विशेष व्याख्यान हुआ। **ह्न अजित जैन**

5. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गोलगंज में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 115 वीं जन्मजयंती दिनांक 21 अप्रैल, 04 को अत्यन्त आनन्दपूर्वक मनायी गई।

21 अप्रैल, 04 को प्रात: कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक पूजन से किया गया। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ समाज को मिला।

सांयकालीन सभा में जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् गुरुदेवश्री के जीवन परिचय पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें अनेक लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके जीवन से जुडे मार्मिक पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन के सदस्यों ने जिला चिकित्सालय, हॉस्पिटल एवं वृद्धाश्रम में अशक्त जनों को दैनिक आवश्यकता की सामग्री वितरण की। **ह्न दीपकराज जैन**

विवाहोपलक्ष्य में प्राप्त दानराशि

1. श्री आनन्दीलालजी प्रेमचन्दजी जैन, केशवरायपाटन के सुपुत्र श्री रवि जैन के विवाहोपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान को 251/- रुपये प्राप्त हुए।

2. श्री आनन्दीलालजी पूरबचन्दजी जैन, बून्दी के सुपुत्र श्री मनोज जैन के विवाहोपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान को 251/- रुपये प्राप्त हुए।

उक्त दोनों महानुभावों का हम हार्दिक आभार व्यक्त करते है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (प्रथम) 2004

J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127